बोरीस जुबकोव

औज़ारों की कहानियाँ

औज़ारों की कहानी

बोरीस जुबकोव

अनुवाद : बीना

अनुराग ट्रस्ट

मेढ़े का सिर फाटक तोड़ने के काम कैसे आने लगा, जानवरों ने हमें क्या सिखाया और आरी को उसके दाँत कहाँ से मिले

भड़ाम! भड़ाम! भड़ाम!

घेराबन्दी किये हुए एक किले के मुख्य द्वार को दुरमुट से पीटकर तोड़ने की कोशिश की जा रही है। लकड़ी के टुकड़े सभी दिशाओं में छिटककर उड़ रहे हैं। दुरमुट के अन्तिम सिरे पर ताँबे का बना मेढ़े का सिर है। उस पर छोटी-छोटी सींगे हैं और चपटा ताँबे का माथा है।

शहतीर पर ताँबे का सिर क्यों है? प्राचीन यूनानियों ने ताँबे के सिर वाले दुरमुट का आविष्कार किया था। उन्होंने देखा होगा कि मेढ़े चारागाह में कैसे लड़ते हैं और चकित भी हुए होंगे कि मेढ़ों के सिर इतने मज़बूत होते हैं। इसलिए उन्होंने द्वारों को तोड़ने के लिए शहतीर पर मेढ़े का सिर लगाया। यही एक ऐसा सिर था जो ताँबे से बना था। इसका परिणाम भी बहुत अच्छा रहा। ताँबे के सिर के बिना जब इससे दुर्ग द्वार पर चोट की गई तो शहतीर अपने आप टुकड़े-टुकड़े हो गया और इससे द्वार का कुछ नहीं बिगड़ा।

बहुत समय पहले ही लोगों ने जानवरों, चिड़ियों, कीड़ों और पौधों को ध्यान से देखना शुरू कर दिया था। वे उन्हें जितना देखते गये उतने ही चौंकते गये और यह सोचने लगे कि जो कुछ भी उन्होंने देखा उसका उपयोग में लाने लायक कैसे बनाया जाये।

उन्होंने बाघ के नुकीले दाँत देखे और उन्हें ईर्ष्या हुई। उन्हें लगा कि उनके दाँत
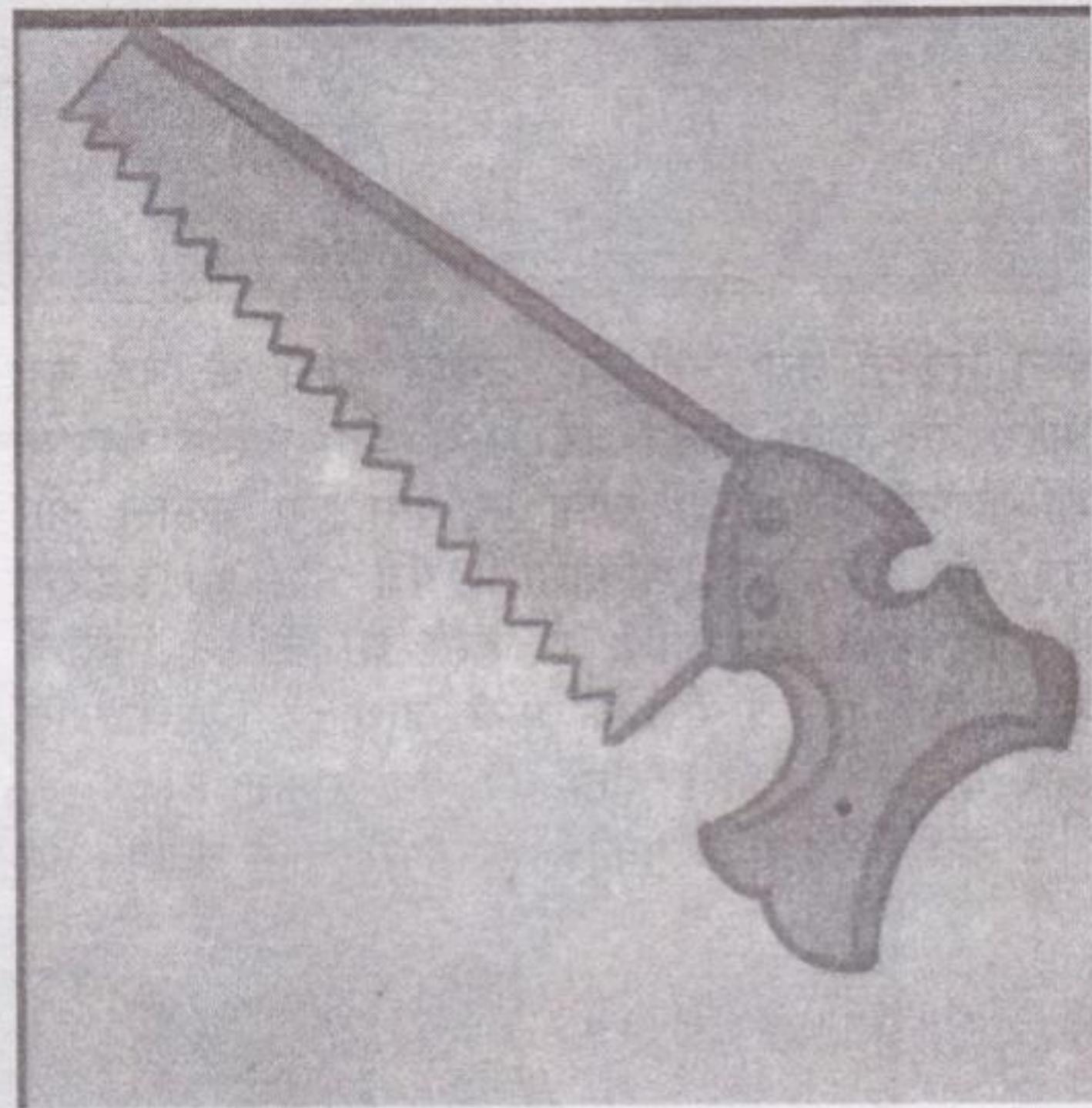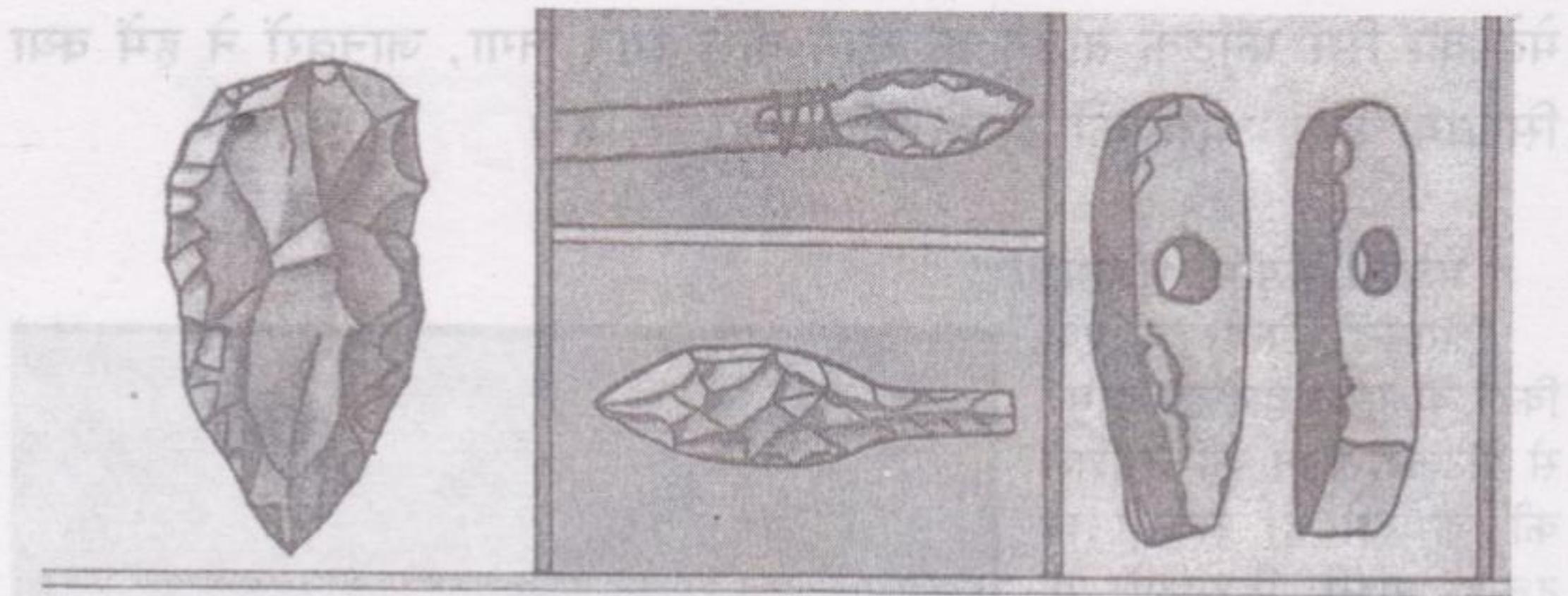
इतने नुकीले क्यों नहीं थे? उन्होंने हाथी के बड़े-बड़े बाहरी दाँत देखे। कितने बड़े थे वे दाँत। उन्होंने रीछ के शक्तिशाली पंजे देखे। लोगों के पास ऐसे नुकीले और बड़े दाँत और इतने शक्तिशाली पंजे नहीं थे। इसलिए वे बाघ, रीछ और हाथी से डरते थे। लेकिन फिर वे सोचने लगे कि वे रीछ के पंजों, हाथी, के बाहरी दाँतों और बाघ के नुकीले दाँतों को बना सकते हैं।

उन्होंने पत्थर के नुकीले टुकड़े से चाकू बनाया और
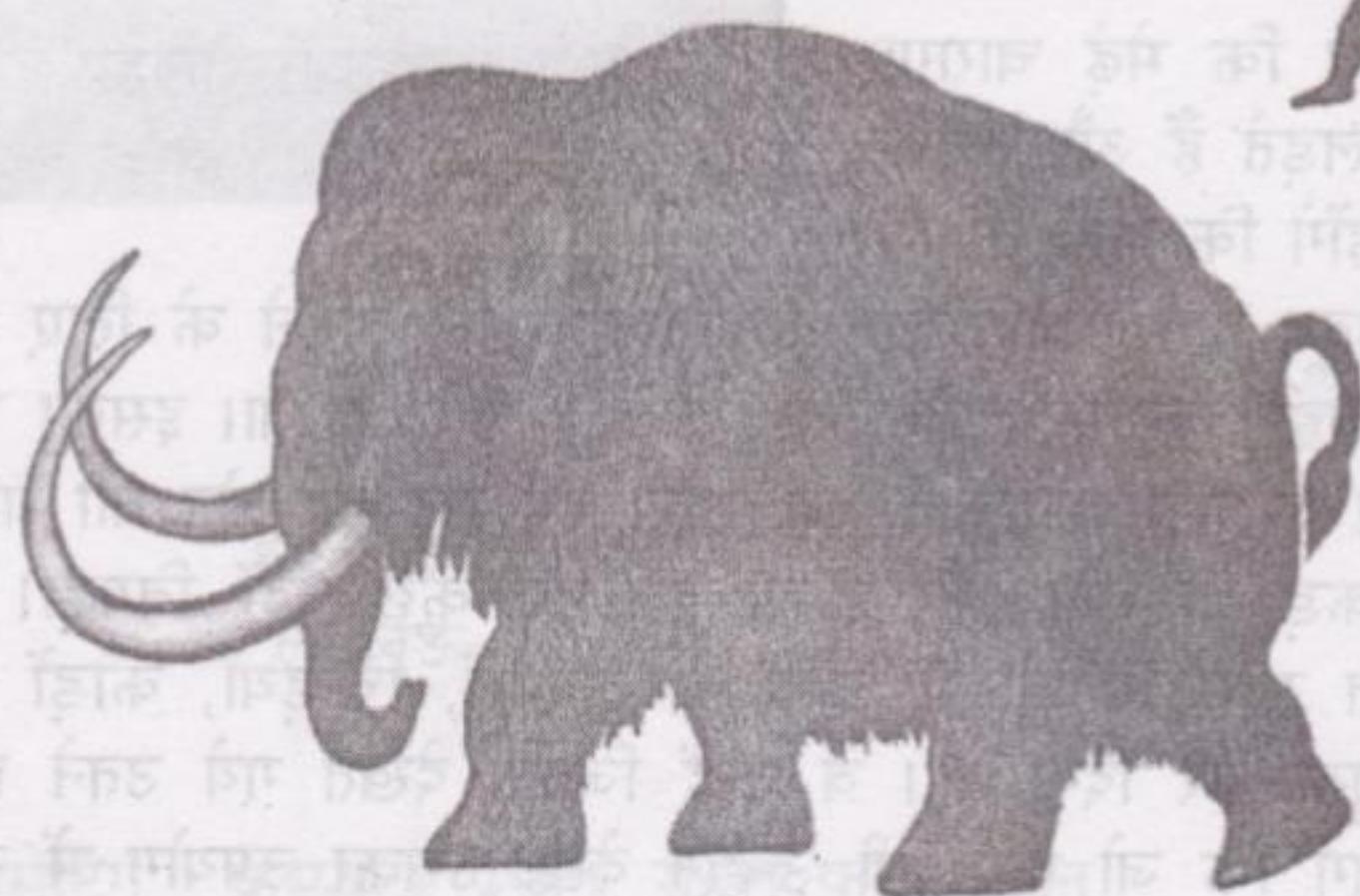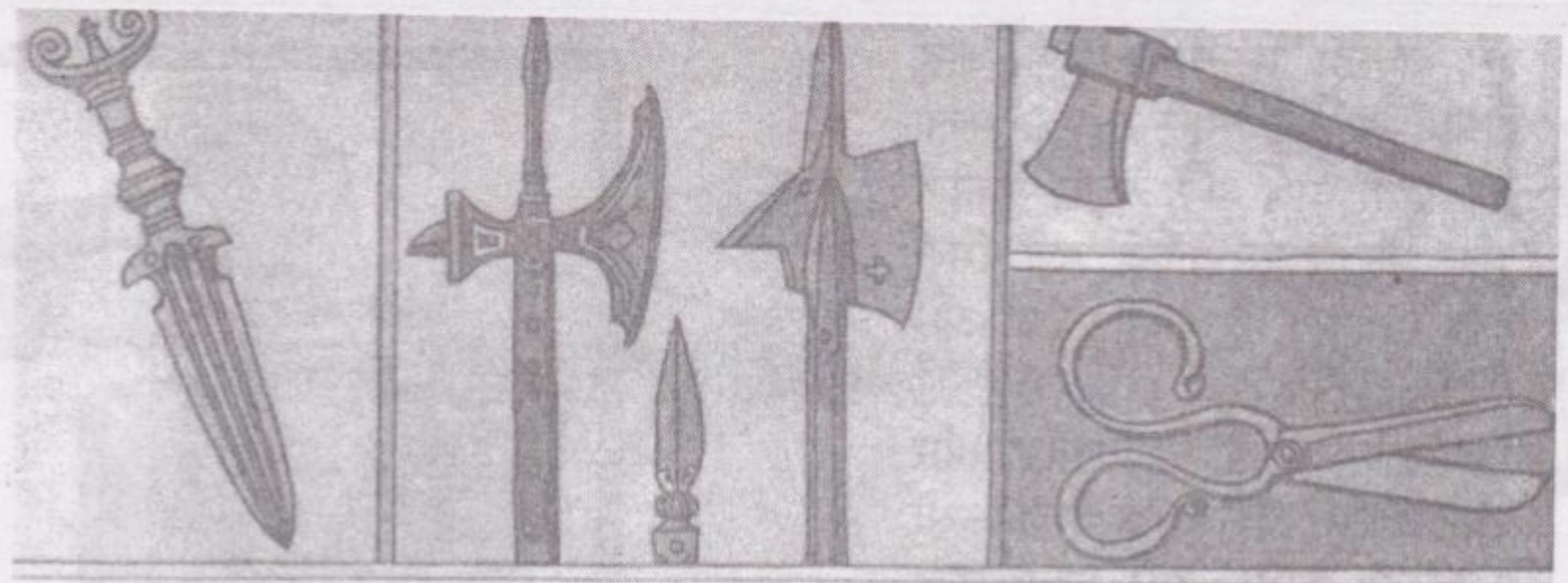
इसे लकड़ी से मज़बूती से जोड़ दिया और ऐसा करने से एक भाला बन गया। अब उन्हें सबसे नुकीले दाँत और सबसे लम्बे पंजे मिल गये। सावधान हो जाओ, बाघों और रीछों!

एक नुकीले भारी पत्थर और एक मज़बूत लकड़ी से अच्छी-सी कुल्हाड़ी बनी। और जब कुछ पत्थरों के नुकीले टुकड़े लकड़ी में फिट हो गये, तो पहली बार आरी सामने आई।

बाद में लोगों ने इन सभी आरियों, कुल्हाड़ियों और चाकुओं को धातु से बनाना सीख लिया।

आजकल हम धातु को काटने वाले औजार से काटते हैं, ज़मीन से पत्थरों को इस्पात के बड़े दाँतों से खोदकर निकालते हैं और लकड़ी को नुकीले दाँतों से चीरते हैं।
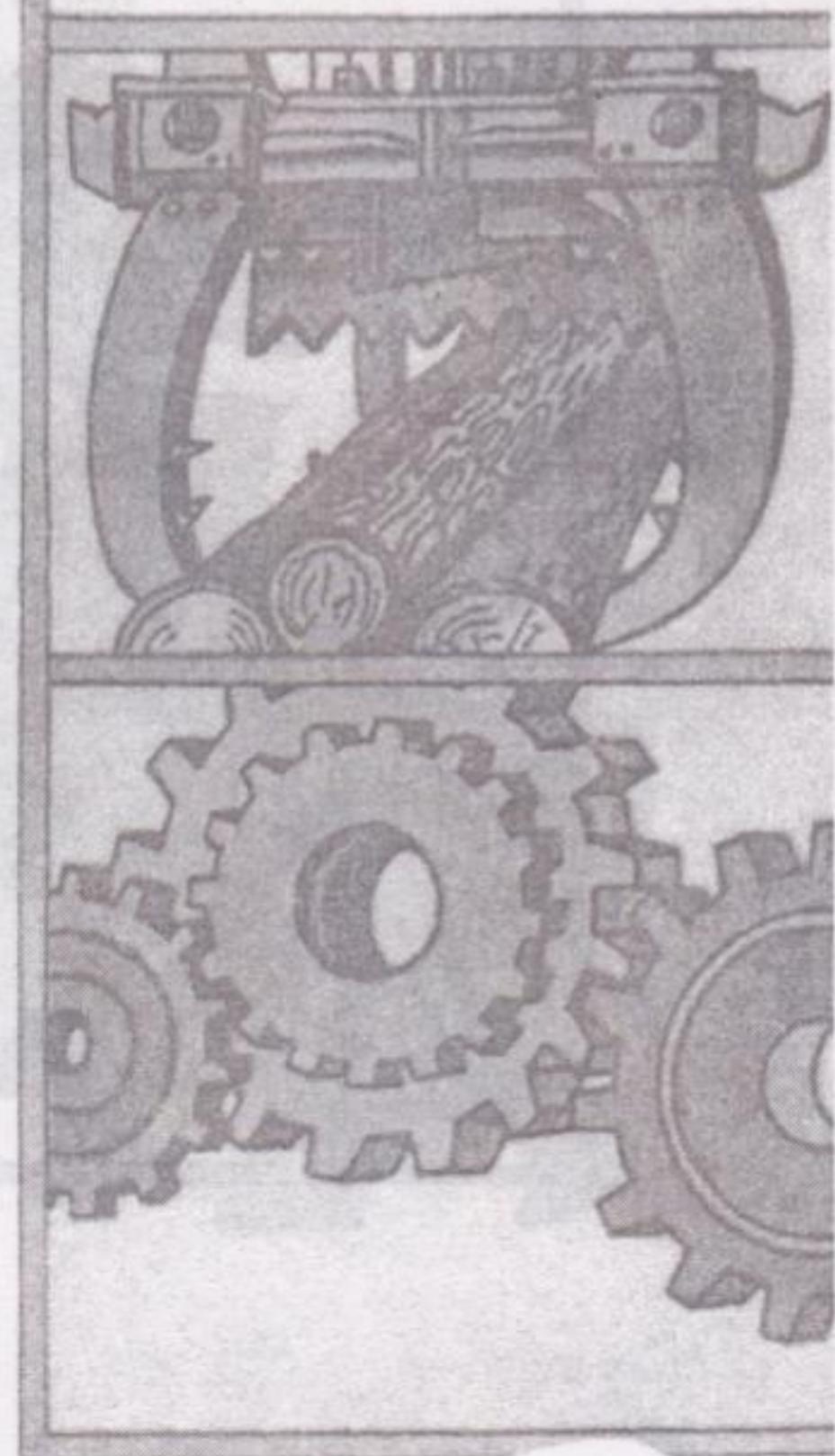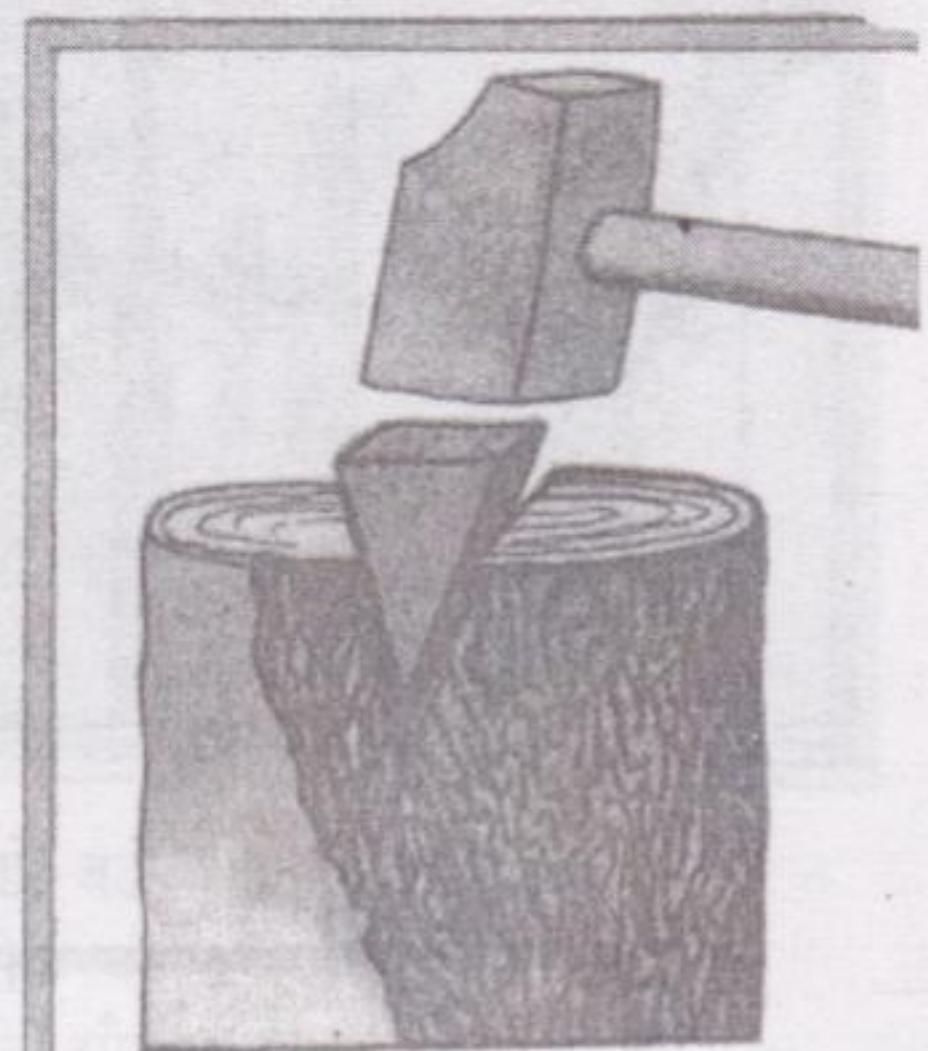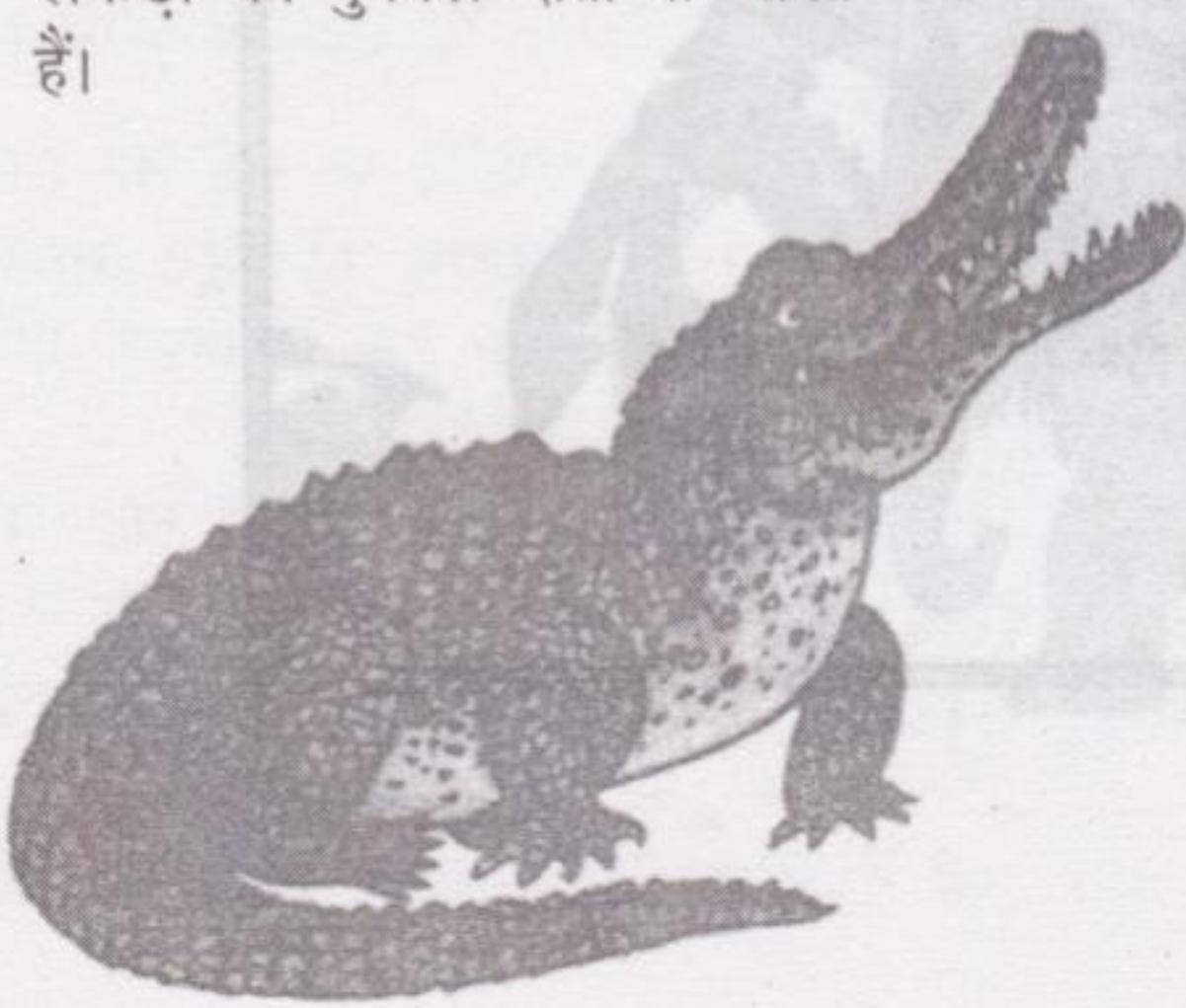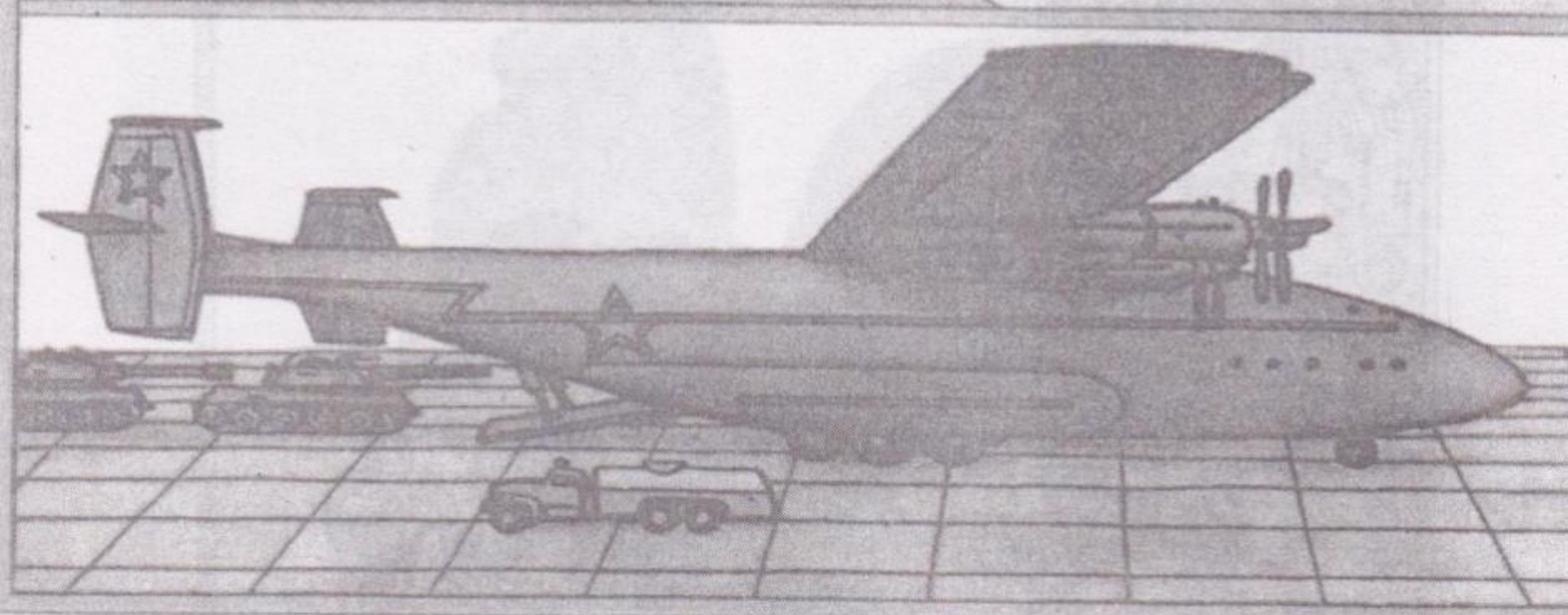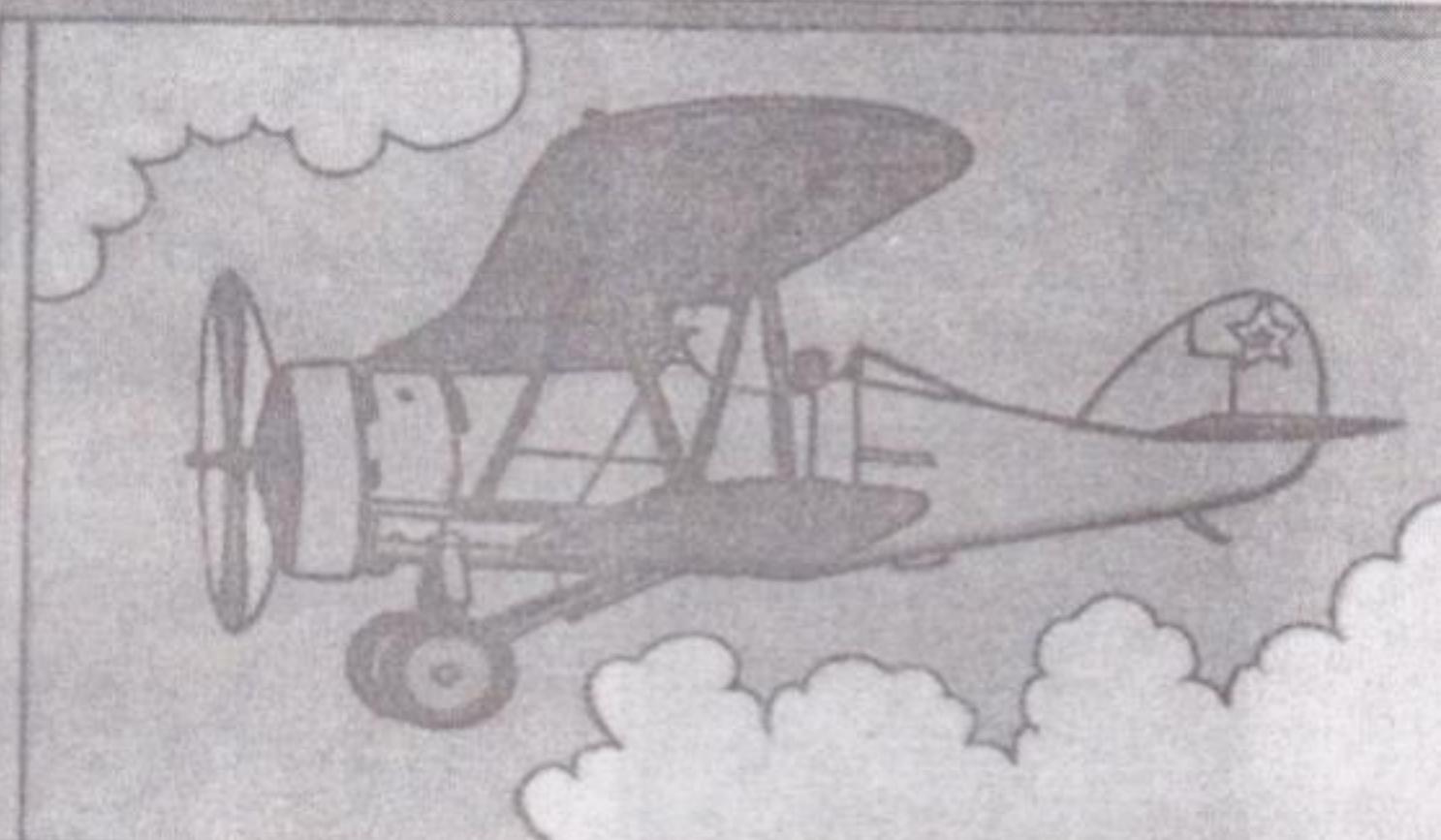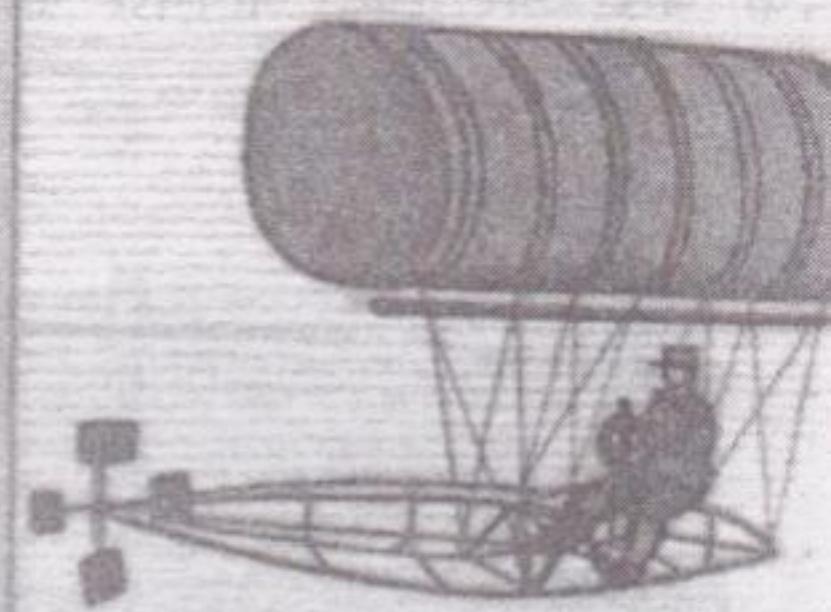
मनुष्य ने जिन काटने के औजारों और दाँतों का आविष्कार किया वे विभिन्न प्रकार के बड़े और छोटे जानवरों के बाहरी और नुकीले दाँतों जैसे दिखते हैं।
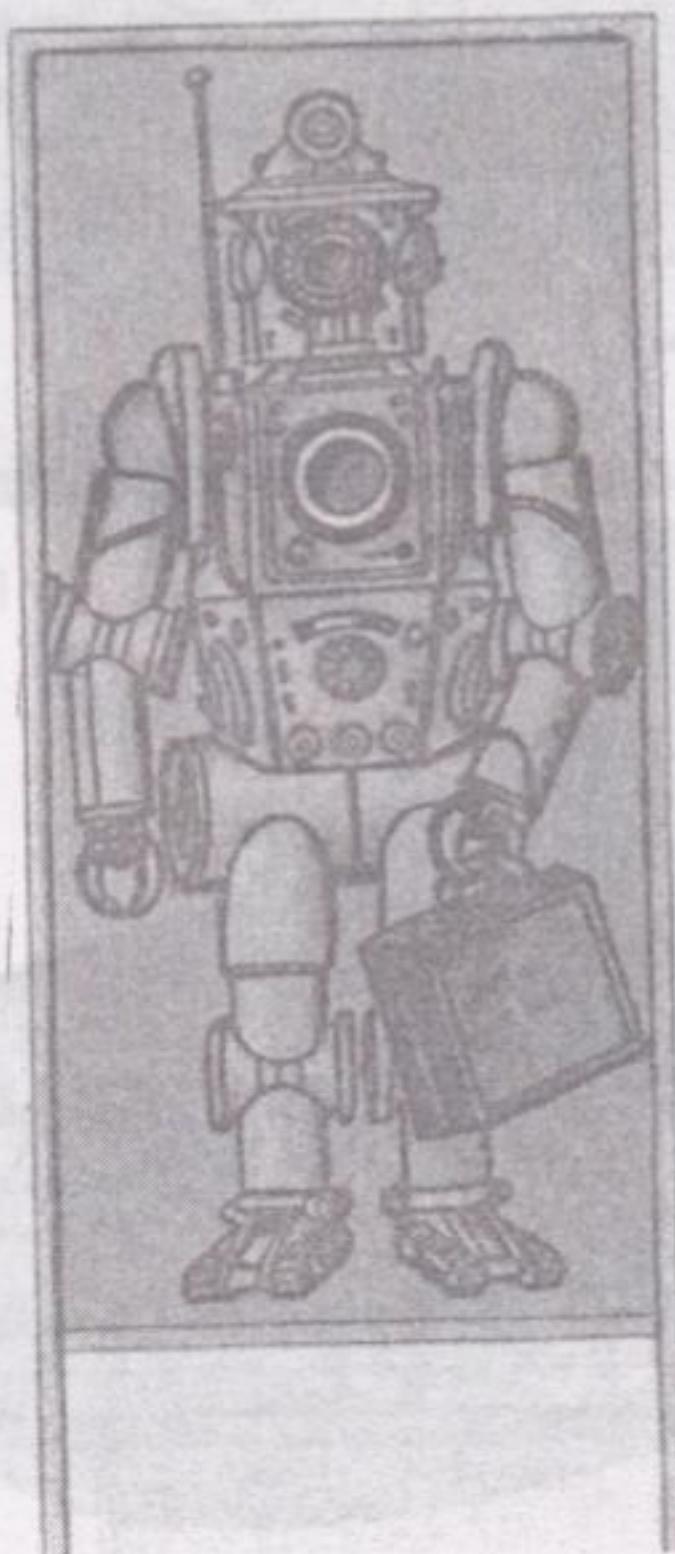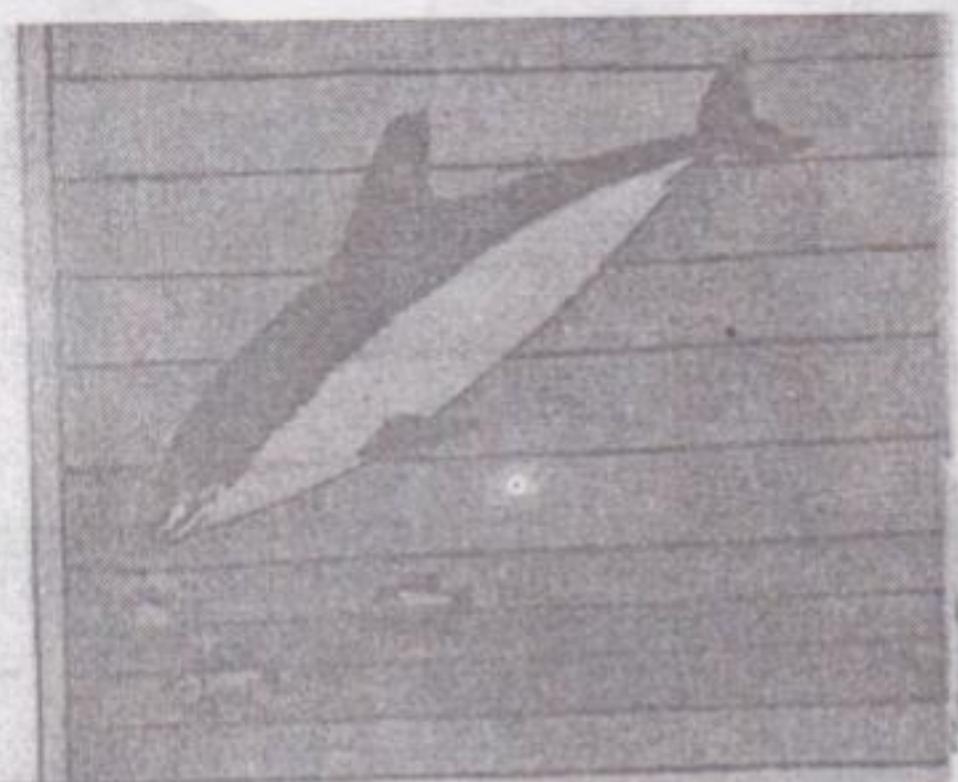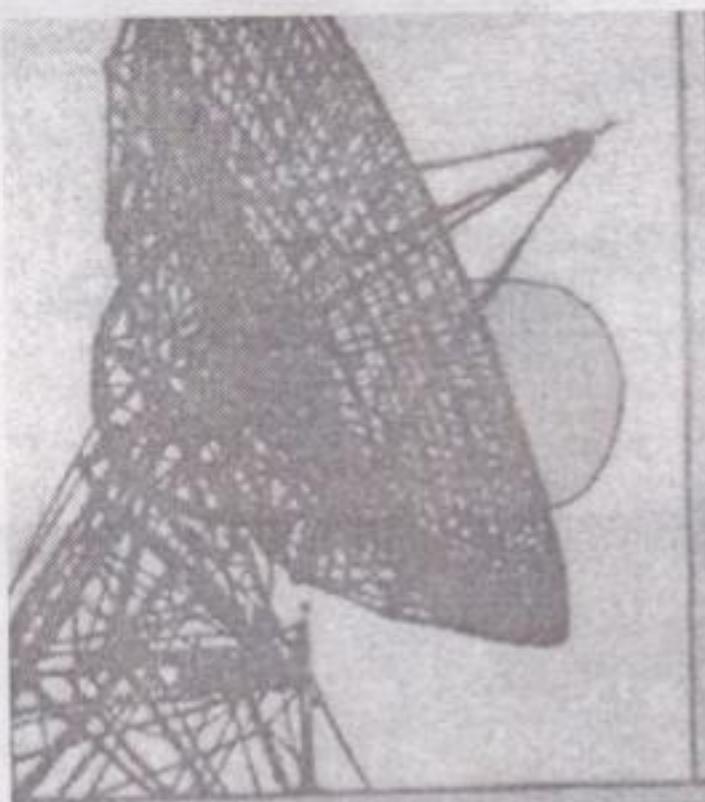
पीले पत्ते और पतंगें, पुल
बनाने वाली मकड़ी और आदमी ने
उड़ने का निश्चय क्यों किया
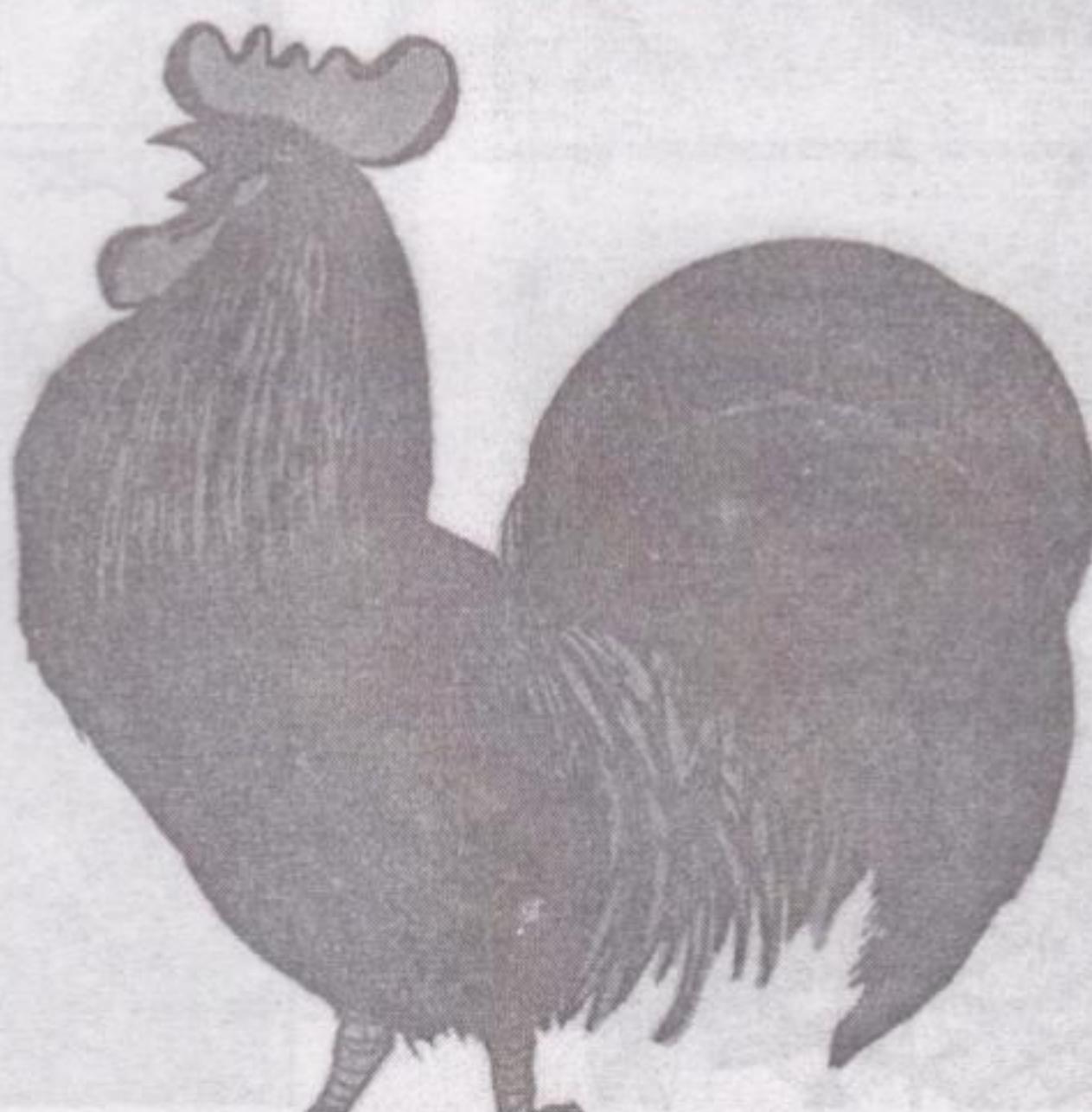
पतझड़ में पत्तों के रंग उड़ जाते हैं और वे पीले पड़ जाते हैं, लेकिन वे पेड़ से जुदा नहीं होना चाहते। हवा बहुत तेज़ और ताकतवर हो जाती है, और किसी तरह पत्ते को अलग करके ज़मीन पर फेंक देती है।
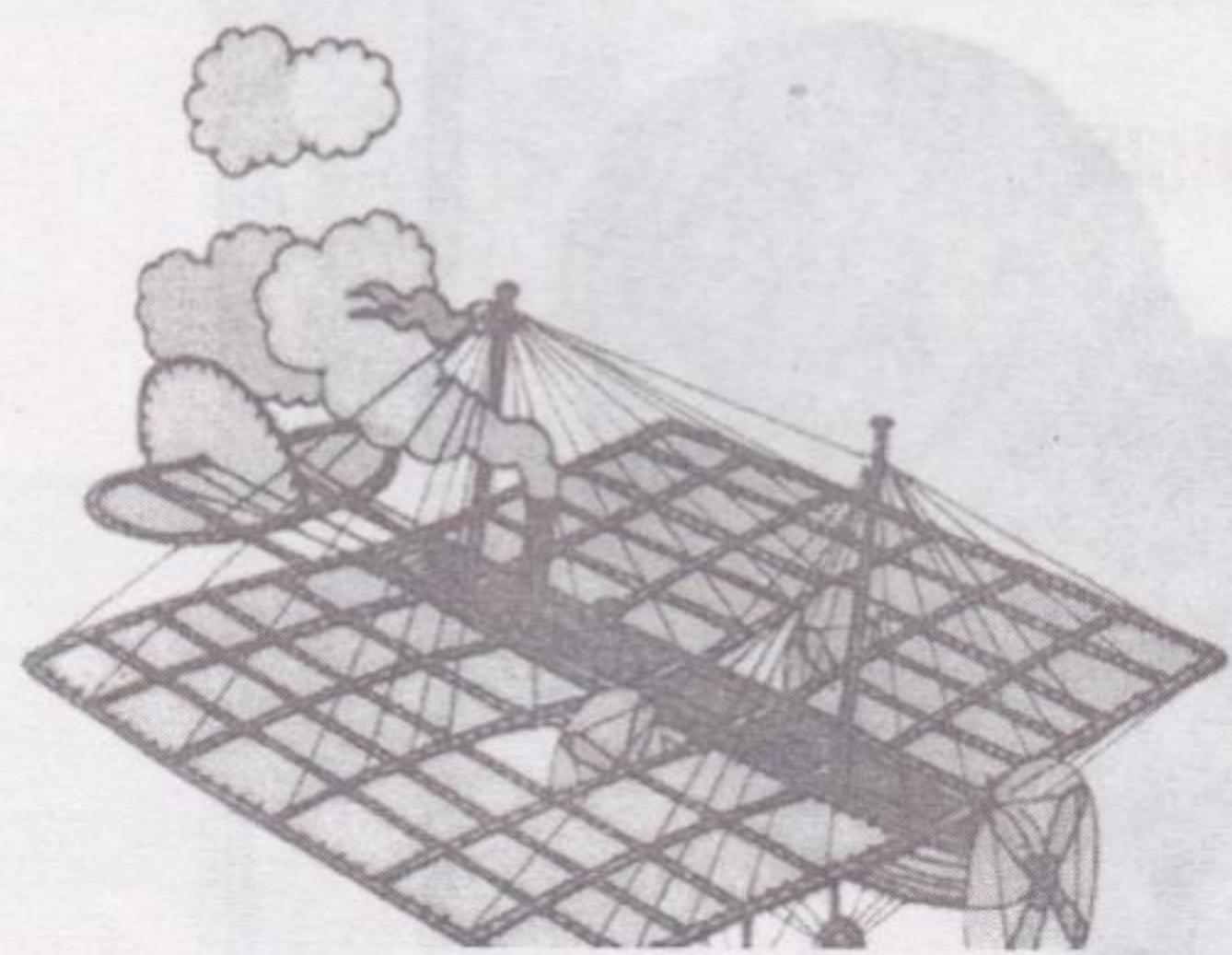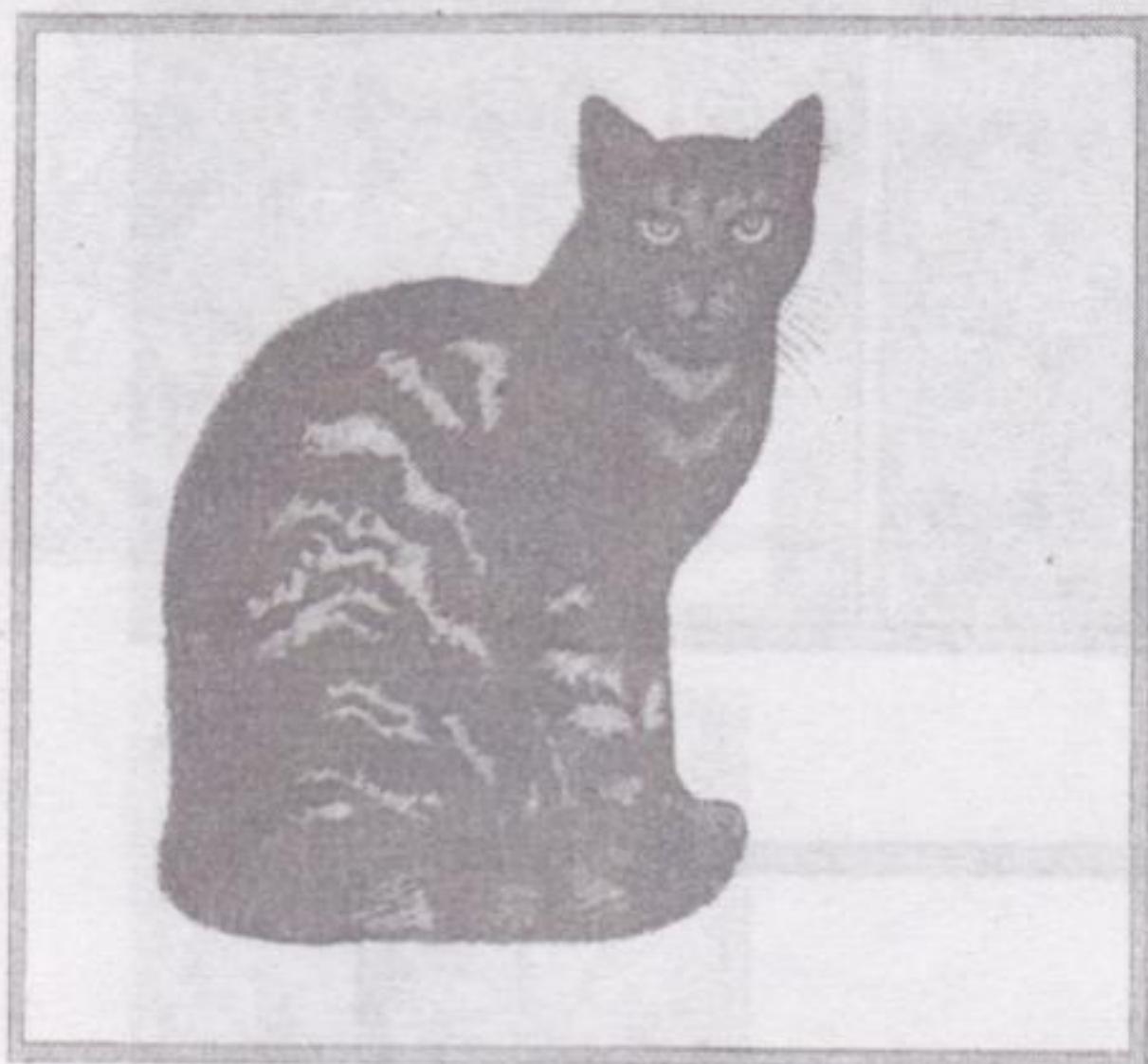
लेकिन एक पत्ता अपने किनारों से मुड़ा हुआ है और यह बिल्कुल एक छोटे पाइप जैसा दिखता है। पत्ता अपने मुड़े हुए किनारों को हवा की तरफ मोड़ता है और हवा सभी दिशाओं से बहती है, तो भी वह पत्ते को नहीं खींच सकती। क्यों? एक कागज़ के टुकड़े को इसके किनारे से उठाओ और तुम देखोगे कि
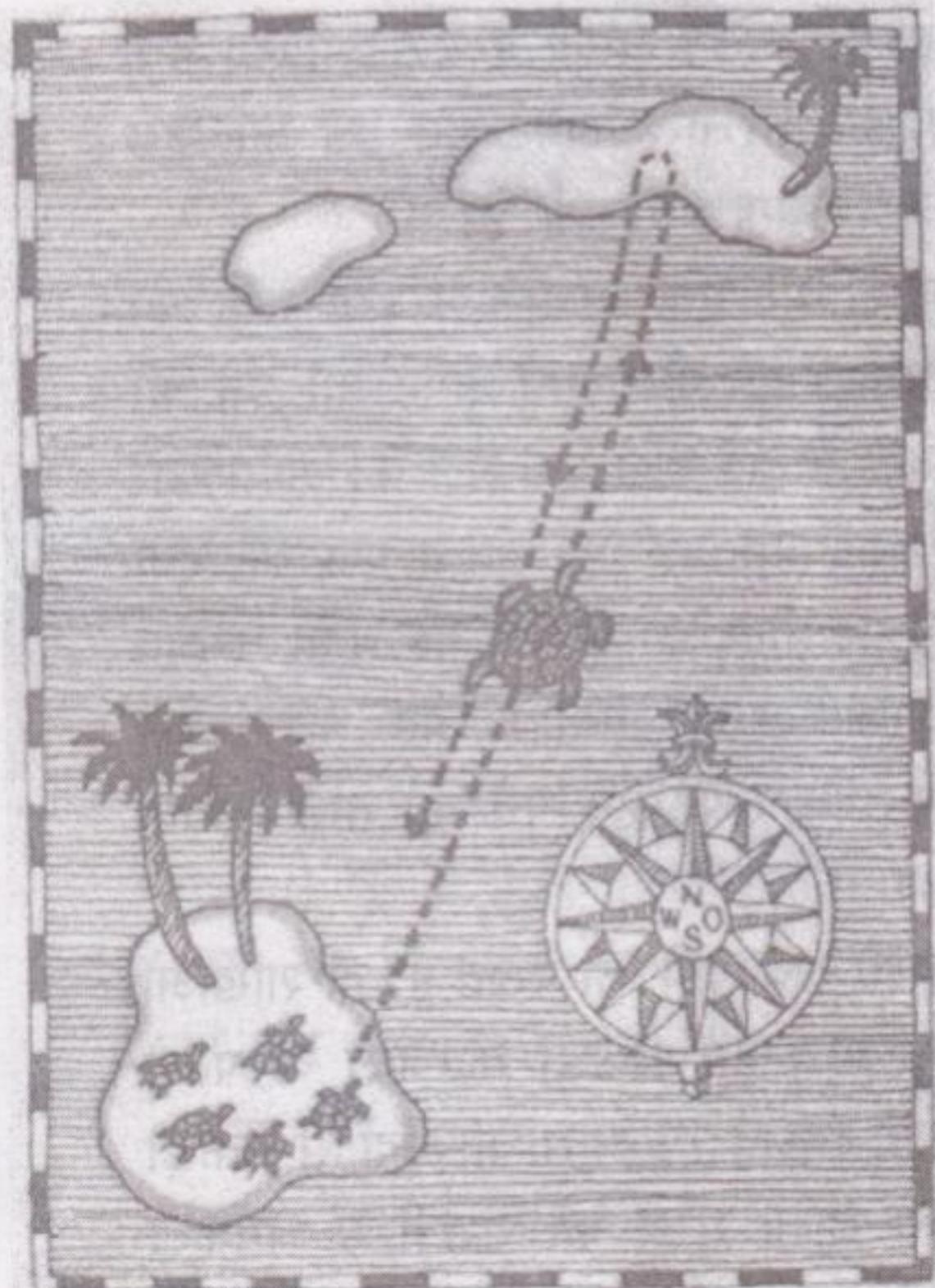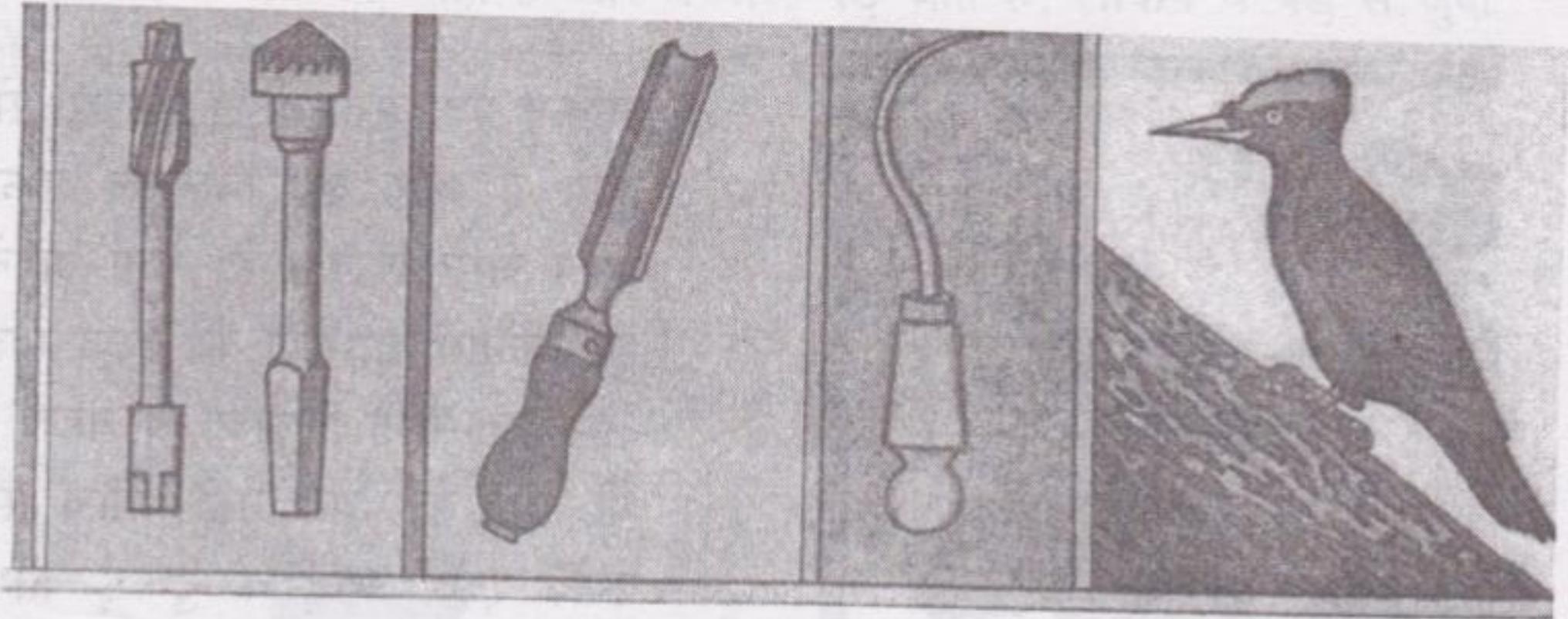
यह मुड़ता है। अब कागज़ को एक पाइप की तरह लपेटो। इसे खूब कसके लपेटो और अब मोड़ने की कोशिश करो। कठिन लगता है न? इसीलिए हवा पाइप की तरह लपेटे हुए पत्ते का कुछ नहीं बिगाड़ सकती है।

एक बार एक आदमी ने इसी तरह का पत्ता देखा और उसने लपेटे हुए पत्ते की तरह दिखने वाले एक पुल का आविष्कार कर दिया। यह एक लम्बा पुल था, एक हज़ार मीटर लम्बा और यह बहुत मज़बूत साबित हुआ। क्योंकि यह पाइप जैसे कसकर लपेटे हुए पत्ते की तरह दिखता था।

चलो अब पेड़ों को देखते हैं। दो शाखाओं के बीच हमें मकड़ी के जाले के पतले धागे दिखते हैं। ओस की बूँदों से मकड़ी का जाला सूरज की रोशनी में चमकता
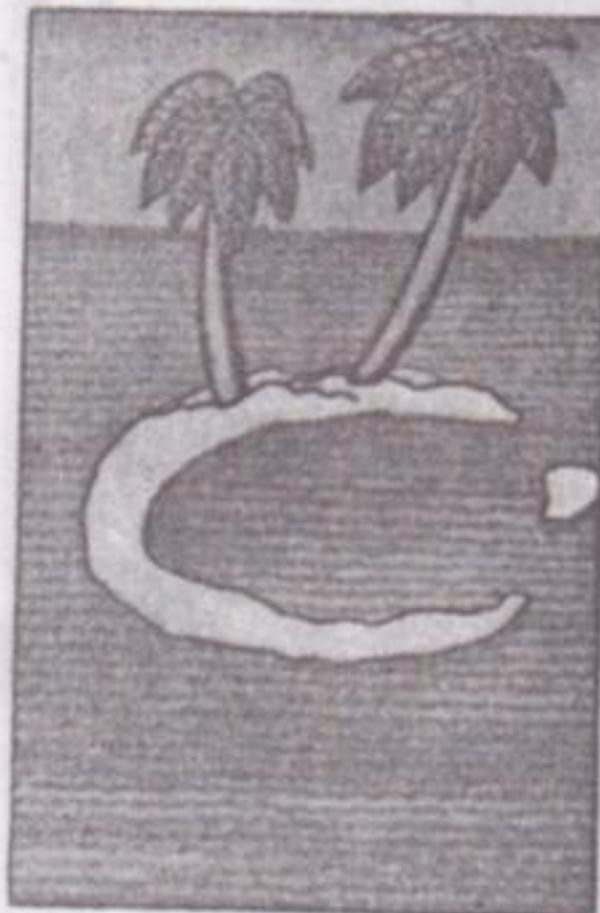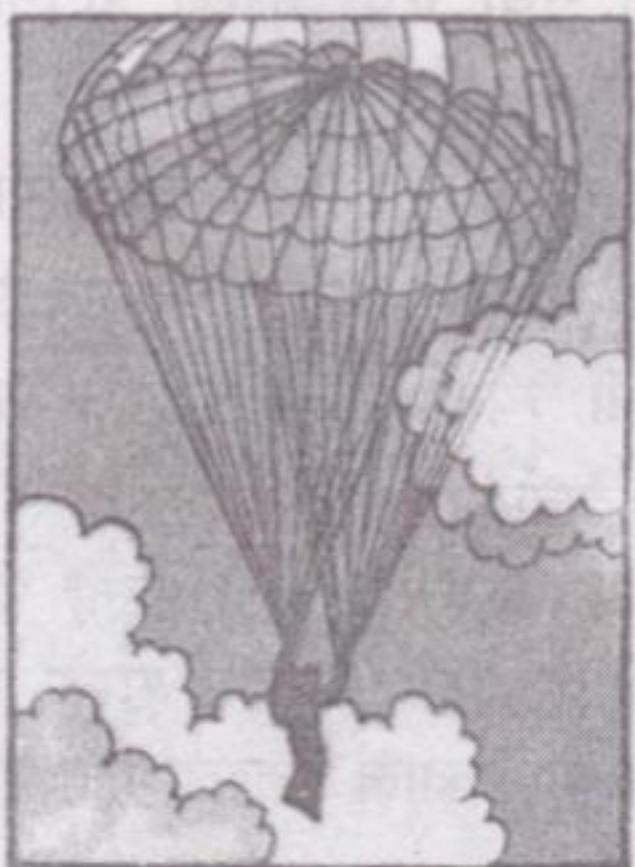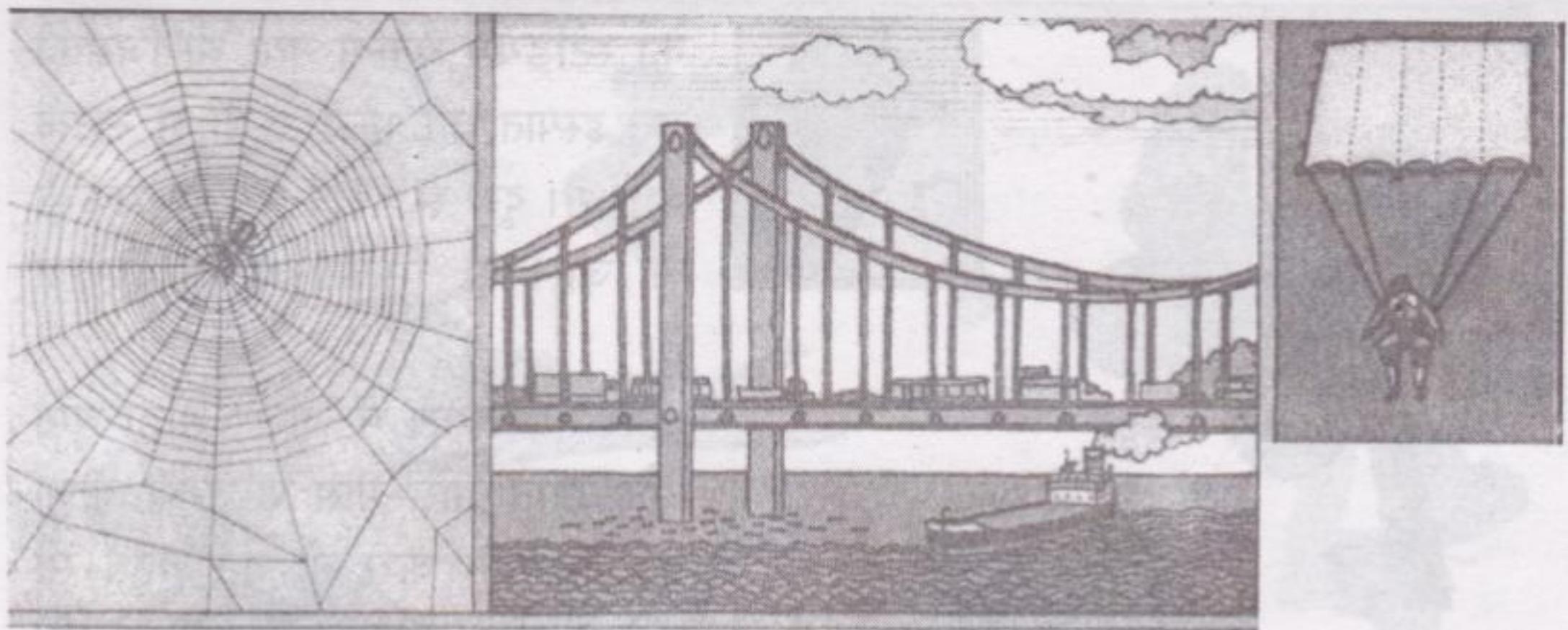
है। मकड़ी का जाला सुन्दर और बहुत मज़बूत होता है। एक बड़ी नीली मक्खी इसमें गिर सकती है या किसी पेड़ की पतली टहनी इस पर गिर सकती है, या हवा बह सकती है, लेकिन जाले का कुछ नहीं बिगड़ता और यह लगातार इधर से उधर झूलता रहता है, मुड़ता है पर टूटता नहीं है।

इसलिए लोगों ने निश्चय किया कि वे जाले की तरह दिखने वाला एक पुल बनायेंगे, पर वह इस्पात की मोटी रस्सी और कड़ियों से बना होगा। और इस तरह से झूलता हुआ एक पुल तैयार हो गया। यह दिखने में अच्छा और मज़बूत था और बिल्कुल मकड़ी के जाले जैसा लगता था। आजकल बहुत से पुल इसी तरह के बनाये जाते हैं।

कुछ समय पहले एक बड़ा-सा खेल

का स्टेडियम बनाया गया था जिसकी छत इस्पात की मोटी रस्सी से लटक रही थी। दूरी से देखने पर यह मकड़ी के जाले से मिलता-जुलता दिखता है।

अगर तुम जंगल में जाकर थोड़ा घूमो और अपने आस-पास की सभी चीज़ों का अध्ययन करो तो तुम बहुत-सी मज़ेदार चीज़ें देखोगे और सीखोगे भी। हवा में उड़ता हुआ एक रोआँ घाटी में पेड़ों के बीच से गुजरता है। यह ऐसे दिखेगा जैसे छोटे-छोटे सफेद पैराशूट नीचे आ रहे हों और तुम कल्पना कर सकते हो कि छाताधारी सैनिक नीचे आने ही वाले हैं। ऐसे ही नन्हे पैराशूट डैण्डेलियन फूल के बीजों को बिखेरने का काम करते हैं।

मैपल वृक्ष के नाम भी एक आविष्कार है। इसकी दो मुड़ी हरी पत्तियाँ दुनिया को छोटे-से हवाई जहाज के पंखे जैसी दिखती हैं।

क्या तुमने कभी कोई पतंग बनायी है? ज़रूर बनाई होगी और तुमने देखा होगा कि यह ऊपर और ऊपर गयी होगी और फिर, मानो हवा में किसी चीज़ से टकराकर, एकाएक नीचे गिरने लगी होगी, और फिर पहले से भी ज्यादा ऊपर उड़ेगी। पतझड़ के मौसम में जंगलों में, अगर ध्यान से देखो, तो तुम देखोगे कि किस तरह से हवा रास्ते पर मुरझाये हुए पत्तों को बटोरकर ले जाती है। अब दुबारा देखो। पीली पत्तियाँ आराम से एक साथ गिरती-पड़ती हैं। फिर वे काँपती हैं, और अपना रास्ता बदल लेती हैं, जैसे कि रास्ते में कुछ रहा हो। लोगों को पतंग का ख्याल पतझड़ की पत्तियों को देखकर ही आया होगा।

बाद में लोगों ने ऐसा बड़ी और जटिल पतंगें बनाना सीखा होगा, जिन पर वे उड़ सकते थे। पतंगे बदलकर ग्लाइडर बनीं। वे बिल्कुल हवाई जहाज़ की तरह थे लेकिन
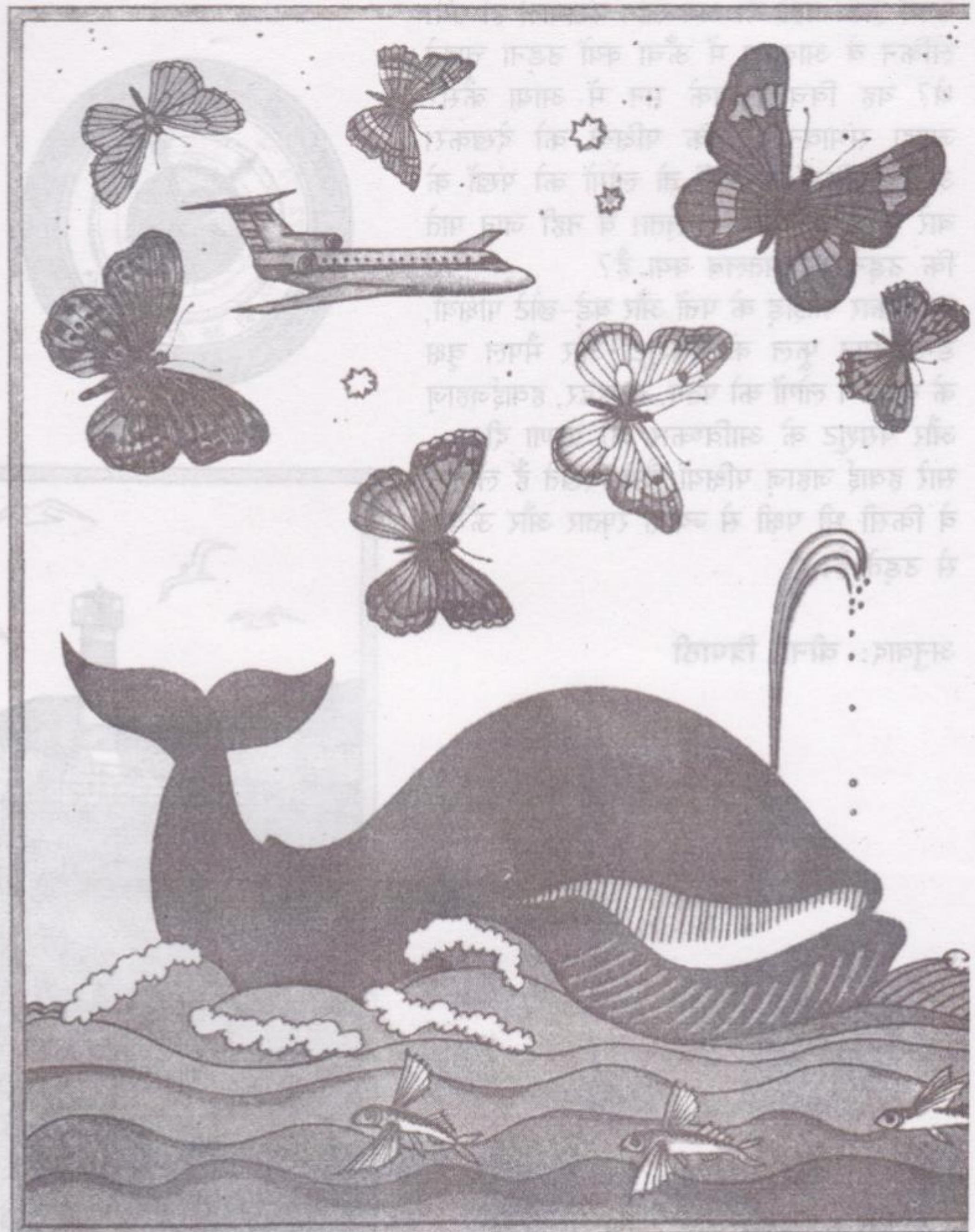
उनमें इंजन नहीं थे। अब लोग पंखवाले हो गये। लेकिन वे आकाश में ऊँचा क्यों उड़ना चाहते थे? यह विचार उनके मन में आया कैसे? ज्यादा संभावना है कि पक्षियों को देखकर। अगर चिड़ियाँ न होतीं तो लोगों को पंखों के बारे में कभी पता न चलता। वे नहीं जान पाते कि उड़ने का मतलब क्या है?

इस प्रकार पतझड़ के पत्तों और बड़े-छोटे पक्षियों, डैन्डेलियन फूल के पैराशूटों और मैपल वृक्ष के बीजों ने लोगों को पतंग, ग्लाइडर, हवाईजहाज़ और पैराशूट के आविष्कार की प्रेरणा दी। सारे हवाई जहाज़ पक्षियों जैसे दिखते हैं लेकिन वे किसी भी पक्षी से ज्यादा रफ़्तार और ऊँचाई से उड़ते हैं।

अनुवाद: **वीना त्रिपाठी**

ISBN 818971907-6
9788189719074